BAMAMANRANJAN

BY

SITA RAM UPADHYA

PILKICHHA.

बामामनरंजन।

जिसे

श्री युत सीताराम उपाध्या

पिलकिछा निवासी ने बनाई।

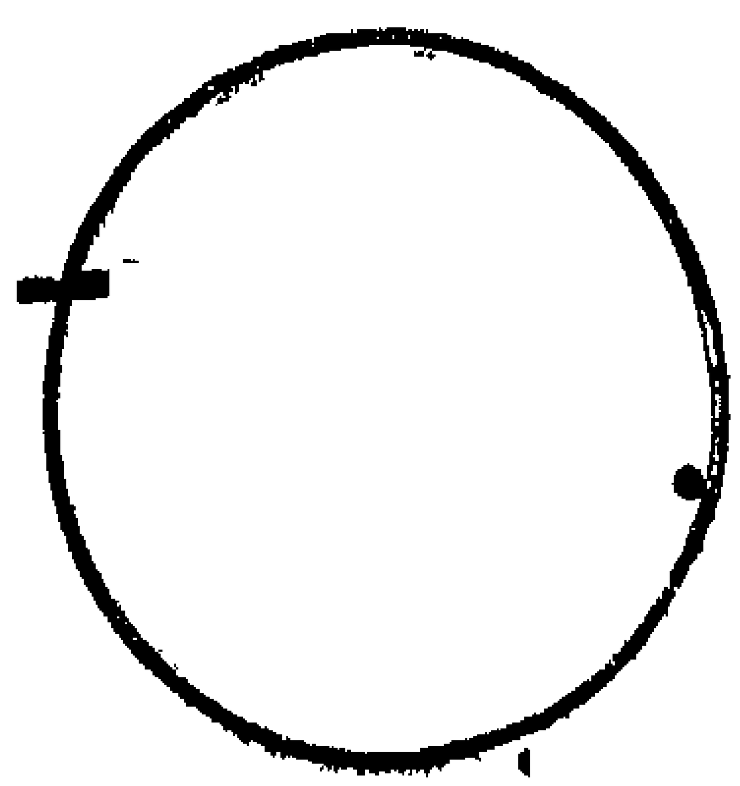
BENARES.

Bharat-jiwan Press.

1886.

College of Fort William

	सोरठा १		द्वितीय २		दोहा १	कवित्त	द्वितीय २		सोरठा १		द्वितीय २	
है एक	श्री	पिल्किछा	द्वि	जबको	दे	ग्रसरिता	जि	सबैगोम	ति	पासुपति	की	रखद्दयाहै
युत श्री	छः	बह्लसु	ज	नवसैं	व	हिशिवआ	ला	मैंजासुका	थि	अस्थापकी	न्हो	यामनैयाहै
प्रतिव	र	खमेला	ए	कयासु	ग्रा	ममैंलगै	जा	सुदिवस	शु	मवाखण्ड	ना	चन्द्रद्दयाहै
मिलैन	हि	जपमा	दे	नकोग्रा	म	आहुंमेला	शु	कातिंकव	रु	नयलोक्य	म	हैंनपैयाहै१
परम	त	हौकुल	वि	मलगो	त	भरद्वाज	आ	दिहैखोरि	आ	चसबैबि	प्र	उपाध्यैयाहै
साहूँ	प्र	काशवि	प्र	राजय	ह	देवदत्त	धी	रसबहि	ज्ञा	त्यरहित	का	करद्दयाहै
बिलग	मा	याजान	सा	रिउदा	सी	नकेसमा	न	ग्रामवाशी	आ	दिश्रीजोय	शै	काषयैंयाहै
भैदेव	द	त्तसुत	द	लकोद	ल	नसुयोग्य	है	शालिग्राम	श	स्मायशको	या	कोकहैयाहै२
उत्पन्नि	जा	कैभयो	गु	णियन	में	व्यासस्म	आ	इमानहु	जो	पैदाजग	में	भैरमैयाहै
दीनन	को	बंधु अ	रु	धर्मको	कं	पतिशिव	ज	गतजासु	क	रनामध	नि	धरद्दयाहै
मनुज	ना	येकसो	हैं	सुतसु	ज	नसीतारा	म	जाकोजोअ	रु	स्वीमनरं	ज	नरचैयाहै
माधौरा	म	मैंशालि	क	रामना	ही	कहींमज	ग	मांहिकरु	णा	निधानक	हि	श्रेष्टभैयाहै३
सबसौं	प्र	तापीह	र्ती	भैदुख	त	हैदीनग	ढ़	यशधर्मं	को	होथकैके	तु	औतरैयाहै
सबप्र	का	रसबै	ग्रं	थमेंमु	ने	न्द्रनिपुण	है	नारायण	रा	मसुनाम	जा	कोपरैयाहै
यदिय	श	कोमैंव्	थ	नलागों	वा	सुकरलि	खा	ह्नजाय	शि	शुकूटिति	नि	कोजद्दयाहै
तृतीय	है	द्वितीय	को	हभाय	स	रैष्टजातो	स	वैदमैद्द	हैं	गैतिनह्ल	के	तनद्दयाहै४



अर्थात् ।

इस पुस्तक को सीताराम उपाध्याय जी ने बनाया परन्तु नाम प्रकाश श्री गोस्वामी देवीप्रसाद दुबे निजगुरु का किया है ॥

॥ बामामनरंजन ॥

॥ दमयन्ती ॥

दोहा ।

जयति गजानन अरि दमन लम्बोदर गुण ऐन ।
शैलसुता सुत शुभ करन सिद्धि सदन सुख दैन ॥१॥
शिव शिव शिव गौरीश हरि मन भजु रे दिन रैन ।
गौरीपति की दया बिनु कहौ काहि सुख चैन ॥२॥
गिरितनया युत पद कमल देबिप्रसाद मनाय ।
चाहत है मदनारि यह भक्ति देव रघुराय ॥३॥
त्यागि असन भूषण बसन योगी जन समुदाय ।
जिन्हिं पद हित सब आस तजि करु तप कानन जाय ॥४॥
तासु चरण सेवक पदहिं उर धरि देबिप्रसाद ।
त्रिया धर्म इतिहास यह रचु मन की अह्लाद ॥५॥
बामा मनरंजन सुभग त्रिया धर्म इतिहास ।
पद्य ताहि चाहौं करन गजमुख पुरवहु आस ॥६॥

चौपाई ।

भीमसेन बिदर्भ कर राजा ।
जासु सुयश प्रतिदेश बिराजा ॥

ताके गृह इक सुभग कुमारी।
रति शतकोटि जासु बलिहारी॥
भुवन मोहिनी सब गुण खानी।
दमयन्ती जेहि सब जग जानी॥
तासु स्वयम्बर रचे नरेशा।
आये सुनि नरपति बहु देशा॥
तिहि महं रह्यो निषद पुर नायक।
बीरसेन सुत नल सब लायक॥
महा गुणी सुशील अति दानी।
बीर बिनीत दया कै खानी॥
तिहि दमयन्ति दियो जयमाला।
लखि सब भांति पुनीत नृपाला॥
अपर नृपति सब निज पुर गयऊ।
श्रीहत दिवस दीप इव भयऊ॥

दोहा।

निषदनाथ निज पुर गयो लै दमयन्ती संग।
द्वादश वर्ष प्रमाण लों कियो भोग बहु रंग॥ ७॥

चौपाई।

सुख महं दिवस बीति कछु गयऊ।
सुता एक अरु सुत इक भयऊ॥

शास्त्र विरोध द्यूत नृप जानत ।
खेलत सदा नेकु नहिं मानत ॥
जा पर बिपति आगमन करई ।
बुद्धि तासु प्रथमहिं अपहरई ॥
पुष्कर नाम बंधु लघु तासू ।
तासों नल खेलत नित पासू ॥
एक दिवस बहु दांव लगावा ।
सकल राज धन धाम गवांवा ॥
जासु संग सोहत मणि ज्योती ।
बचु न ताहि कछु तजि इक धोती ॥
मित्र होंहि रिपु आपद माहीं ।
सुधा गरल सम तें ह्वै जाहीं ॥
अजया पग जल सागर होई ।
बिपति मध्य हित रहै न कोई ॥

दोहा ॥

श्रेष्ठ बंधु यद्यपि रहे नहिं बिचार कछु कीन्ह ।
पुष्कर दियो निकालि तिहिं राज पाट हरि लीन्ह ॥८॥

चौपाई ॥

तब दमयन्तिहिं संग लिवाई ।
चले भूप निज नगर बिहाई ॥

सुत इक अरु इक सुता जो रहे ।
प्रथम सो मातु पिता गृह गये ॥
नृप पुष्कर पुर भयउ नरेशू ।
फिरवायो डौंडी निज देशू ॥
कोउ देइ जौं नलहिं निवासा ।
शीघ्र करब मैं ता कर नासा ॥
सो पुरजन परिजन सो लोगा ।
भयो सबै रिपु दैव संयोगा ॥
अह निसि त्रय अहार बिनु बीते ।
फिरत बिहाल रहे कर रीते ॥
चौथे दिवस गयो सरि तीरा ।
कर ते पान कियो तंह नीरा ॥
बन ते कन्द मूल कछु आनी ।
कालक्षेप करहिं युत रानी ॥

दोहा ।

दमयन्ती सों कह्यो नृप प्रिया बात यह मान ।
जाइ पितां गृह रहो तुम जब लगि बिपति बिहान ॥९॥

चौपाई ॥

जो होइहिं ईश्वर अनुकूला ।
मिलिहौं बेगि मिटिहिं सब सूला ॥

दमयन्ती बोली अकुलाई ।
तुम बिनु मोहि कौन सुखदाई ।
केवल पति तिय प्रान अधारा ।
अहहु नाथ कस करत बिचारा ॥
मातु पिता सुत बित परिवारू ।
पिय बियोग नहिं तिय सुख सारू ॥
भूषण बसन खान औ पाना ।
होइ न कछु तव दरश समाना ॥
कहिहौ जो पिय पुनि अस बाता ।
करिहौं मैं निज आतम घाता ॥
अस कहि कर डारी पति ग्रींवा ।
भई नींद बस सो छबिसींवा ॥
तब नल मन अस कियो बिचारा ।
बिनु यहि तजे न मोर उबारा ॥

दोहा ।

उरत फूल की सेज पर अति कोमल सुकुमारि ।
सो किमि चलिहैं अगम पथ कांट कुश निरवारि ॥१०॥

चौपाई ।

मैं सब सहब परिहिं सिर जोई ।
देखि न सकब प्रिया दुख सोई ॥

जो मैं तजि देहौं यहि ठामा।
काह्न बिधि पहुंचिहि पितु धामा॥
करि अस अस बिचार मन माहीं।
त्यागि दिये तेहिं तरुवर छाहीं॥
रहे न बसन नृपति के अंगा।
सुनहु हाल जेहि बिधि भे भंगा॥
बिहग हेतु धोती नृप खोवा।
बसन हीन बहु बिपति बिगोवा॥
जा पर होंहिं बिधाता बामू।
होत ब्यर्थ ता कर सब कामू॥
गमन काल रानी कर सारी।
अर्द्ध भाग नृप लीन्ह उतारी॥
तासु दशा नहिं कछु कहि जाती।
को कवि कहै कठिन करि छाती॥

दोहा।

जा पर परै सो जानहीं बिपति केर उत्पात।
तन प्रसूति के पीर को बांझिहिं काह जनात॥११॥

चौपाई।

चलत पंथ नृप अति अकुलाने।
मनहुँ मीन जल ते बिलगाने॥
फिरि फिरि नल चितवत तेहि ओरा।

गयो दूर करि हृदय कठोरा ॥

यहां आगि दमयन्ती देखा ।
कतहुं न प्राणनाथ निज पेखा ॥
तासु दशा तिहि समय निहारी ।
भये विकल खग मृग बनचारी ॥
सुनि पत्थर हिय शूल जनावा ।
धरि धीरज कवि कछुक बनावा ॥
सिर धुनि कहत पुकारि पुकारी ।
किहि कारण पिय मोहि बिसारी ॥
अजहुं प्राणपति दर्शन देहु ।
ह्वै कठोर जनि तजहु सनेहु ॥
चेत करहु पिय व्याह कि बाता ।
दर्द न हिय कछु आजु समाता ॥

दोहा ।

करत विलाप अनेक विधि खोजत गिरि सरि खोह ।
चली जात रोदन करत कतहुं न पावत जोह ॥१२॥

चौपाई ।

पंथ मांझ अजगर इक रहऊ ।
ताहि देखि खल धावत भयऊ ॥
तब दमयन्ती कीन्ह पुकारा ।

पहुंचि व्याध इक ताहि उबारा ॥
एकहि बाण अंधाध तेहि मारे।
पुनि दमयन्ती पहं पगुधारा ॥
देखि रूप सठ गयो लुभाई ।
चाहत ता कर धर्म्म नसाई ॥
तब रानी बोली अकुलाई ।
पितु कहि सकल धर्म्म समुझाई ॥
काहू विधि जब दुष्ट न माना ।
रानी प्रभु सों बिनती ठाना ॥
हे जदुनन्दन राखहु लाजा ।
शरणागत की कीजे काजा ॥
तुमहीं द्रुपदसुता पति राखा ।
महं भारत पुराण अस भाखा ॥

दोहा ।

दीनबन्धु निज नाम की राख्यो लाज कृपाल ।
ताके कर के शरहि को कियो ताहि को काल ॥१२॥

चौपाई ।

भीमसुता जब बिनती कीन्हा ।
तब सठ निज कर शर गहि लीन्हा ॥
रानी पर छोड़े करि क्रोधा ।
प्रेरक हरि कछु औरि [illegible]धा ॥

तासु [illegible] उलटि पठावा ।
तिहिं ते खल कर प्राण नसावा ॥
तिपव्रत सम नहिं कछु जग माहीं ।
जिहिं ते नारि अमरपुर जाहीं ॥
पतिव्रत नारि जाहि गृह माहीं ।
शिव बिरंचि हरि ताहि डराहीं ॥
वृन्दा रही पतिव्रत नारी ।
~~तिहिं पति [illegible] पियारी~~ ॥
जालंधर खल निश्चर कोंही ।
सुर नर नाग मुनिन कर द्रोही ॥
प्रभु जग हित जब धर्म नसावा ।
समर मध्य तब हरि जय पावा ॥

दोहा ।

श्राप देइ हरि कों कठिन भई भस्म पति साथ ।
ताही ते तुलसी प्रगट चढ़त विष्णु के माथ ॥१४॥

चौपाई ।

जानत यह इतिहास सकल महि ।
ताते मैं भाख्यों अति अल्पहि ॥
अपर कथा सुनिये मन लाई ।
सती मृतक पति सके बुलाई ।

इन्द्रजीत कहं लछिमन मार्यो ।
तासु त्रिया चित भयो खभारा ॥
को अस जीति सकै पति मोरा ।
सुनि भुज हाल लिखि सत जोरा ॥
सिर हित रघुपति पंह सो आई ।
पति भुज लिखित प्रभुहिं दिखलाई ॥
कपिन महा अचरज उर मान्यो ।
पतिव्रत धर्म [illegible] कार जान्यो ॥
तब सुलोचना कहु बिलखाई ।
धरे प्राणपति कस कदराई ॥
सुनत हंसे रव करि अति सीसा ।
चौंकि उठे सब भालु कपीसा ॥

दोहा ।

पिया संग निज तन दही गई विष्णु के धाम ।
सती अधम हू पतिहिं निज लेय जात [illegible] ॥१५॥

चौपाई ।

सती प्रभाव वेद अस भाखा ।
करहिं अवसि जो जिय महं राखा ॥
पतिव्रत वश्य सदा हरि रहहीं ।
ता [illegible]र मुख दुख लखि चित गहहीं ॥

कलि[illegible] पुरवहिं जगदीशा ।
देखेधू तिन्हि नावहिं शीशा ॥
सती नारि दरिद्र सकुटारी ।
सुनहु विप्र इक परम भिखारी ॥
नाम सुदामा सब जग जाना ।
विप्र धर्म्म अति निपुण सुजाना ॥
तिहि गृह रही पतिव्रत नारी ।
तजे न पति पद विपति मंझारी ॥
तन पर रही व्याह की सारी ।
पति मुख वच पल सकै न टारी ॥
एक समै ता कर सल देखी ।
कियो कृपानिधि दया बिसेखी ॥

दोहा ।

ताकी मति महं प्रविशि हरि उपजायो यह बात ।
श्री [illegible] पिय सखा पति दुख तहां बिलात ॥ १६ ॥

दोहा ।

पति सन सो बोली कर जोरी ।
सुनहु प्राणपति बिनती मोरी ॥
तव सहपाठी हैं यदुराई ।
नाथ ताहि अब याचहु जाई ॥

होइहि तहं तब दारिद भंगा।
मित्र समुझि मिलिहैं भरि अंगा॥
कहंहिं सुदामा सुनु तिय बाता।
जहं न निबाह अवनि पति पाता॥
रहंहिं द्वार ठाढ़े कर जोरे।
चाहत कमल नैन की कोरे॥
कबहुं भृकुटि फेरहिं नंदलाला।
निरखि रूपसी होइ निहाला॥
लगी ठट्ट जहं गज रथ घेरे।
तहां निबाह होइ किमि मेरे॥
मैं नहिं जाइ सकौं तिहिं ठामा।
कंचन सिंहासन जिहिं धामा॥

दोहा।

जब को हौं गुरुभाइ मैं रही बात कछु और।
अब तो वै महराज भे गज झूमत जिहिं पौर॥१७॥

चौपाई।

बोली तबहि पतिव्रत नारी।
सुनहु प्राणपति बिनय हमारी॥
जो प्रभु तीन लोक को राजा।
साजहि सकल जगत को साजा॥
जल थल कृमि लघु अरु बड़ गज आदी।

पालत सबहिं जु ब्रह्म अनादी ॥
जो प्रभु सब घट घट के बासी ।
विनय सुनत जन आरत भाषी ॥
द्रुपद सुता कर चीर बढ़ायो ।
गजहि ग्राह ते धाइ बचायो ॥
बंधु त्रास सुग्रीव दुखारी ।
दीन्ह राज तिहिं संकट टारी ॥
विभीषनहिं सरनागत आये ।
कहि लंकेश तिलक करवाये ॥
प्रह्लादहिं बचयो बहु बारा ।
सो चरित्र जानत संसारा ॥

दोहा ।

अमित जनन दुख नासिहु बेद न पावै पार ।
तिहिं किमि व्यापै राज मद लेहैं खबर तुमार ॥१८॥

चौपाई ।

मुनि बोले द्विजराज सुजाना ।
देहु भेट हित जो मन माना ॥
तन्दुल चूर्ण आनि सो नारी ।
बांधे ताहि खण्ड करि सारी ॥
देइ सुदामहिं तहां पठावा ।
मनु दरिद्र तिहिं महँ अरुझावा ॥

अपर कथा जानत सब कोई।
जिहिं बिधि भयो अवनिपति सोई॥
ताते मैं अति अल्पहिं भाखा।
सुनहु कथा जो बीचहिं राखा॥
हरि रानी की धर्म्म बचायो।
खल निज कर्म कियो फल पायो॥
पुनि सो खोजति अगम पहारा।
करत जाति यहि भांति पुकारा॥
पहुंचि सुबाहु नगर महँ सोई।
दासी बनि बिपत्ति निज गोई॥

दोहा।

भीमसेन तिहिं खोज हित द्विज पठयो चहुं देस।
खोजि ताहि तिन लायउ हर्षित मिले नरेस॥१८॥

चौपाई।

दमयन्ती निज पितु गृह आई।
अंतर कथा सुनहु मन लाई॥
नल निज प्रिया बिरह दुख दीना।
बिलपत जिमि फणीस मणि हीना॥
पहुंचे जाइ अवध पुर माहीं।
नृप रितुपर्ण न चीन्हे ताहीं॥
नल निज बाहुक नाम बताई।

ह्वै सारथी कर्म्मत सेवकाई ॥
पता हेतु विदर्भ की राजा ।
पठयो चहुं दिस विप्र समाजा ॥
ता मह द्विज इक नाम सुदेवा ।
कछु नल नृप कर लायो भेवा ॥
भीमसेन सन सो अस भाखा ।
पूर्ण पता मह संसय राखा ॥
सारथि एक अवध नृप केरा ।
बाहुक नाम ताहि सब टेरा ॥

दोहा ।

दमयन्ती कर नाम सुनि सो अति कियो विषाद ।
कहे नहीं निज भेद कछु बहुत कियो मैं बाद ॥२०॥

चौपाई ।

दमयन्ती मन मह अनुमाना ।
प्राणनाथ सो बात न आना ॥
कहत पिता सन सो अकुलाई ।
अवसि ताहि अब लेहु बुलाई ॥
कीन्हे नरपति अमित उपाया ।
काहू भांति न सो जब आया ॥
तब दमयन्ती पत्र लिखावा ।

अवधराज पहं दूत पठावा ॥
पत्र हाल सुनिये मन लाई ।
लिखु ऊपै भीमसेन नरराई ॥
हार्यो मैं सब देस ढुंढ़ाई ।
नल कर हाल कतहुं नहिं पाई ॥
दमयन्ती कर दूसर व्याहा ।
चाहौं करन सुनिय नरनाहा ॥
करि मम ऊपर कृपा विसेखी ।
आइय मोरि दीनता देखी ॥

दोहा ।

अल्प दिवस को लगन धरि पठयौं पत्र तुरंत ।
बिनु हांके नल नृपति जिहिं अश्व न पावै अंत ॥२१॥

चौपाई ॥

नृप ऋतुपर्ण बहुत घबरावा ।
हिय मैं कछु ठहरै न उपावा ॥
कह नल नृप चिन्ता परिहरहू ।
यह विश्वास हृदय महं धरहू ॥
लगन सु प्रथम देब पहुंचाई ।
सुनि नरनाह हर्ष बहु पाई ॥
दूजो जग नहिं याहि समाना ।

चहे हांकि रथ जो पहुंचाना ॥
ऋतुपर्णहिं रथ पर बैठावा ।
तिहिं मिति तें प्रथमहिं पहुंचावा ॥
स्वागत करि बिदर्भ नृप तासू ॥
मिले दोउ करि परम हुलासू ।
अवध भुवाल गयो गृह माहीं ।
कछु सामां तहं देखे नाहीं ॥
तिहिं तजि रहे न दूसर राजा ।
कौशलपति उर भै अति लाजा ॥

दोहा ।

अश्व बांधि घुड़शाल में जीर्ण खाट पर जाय ।
नृप बिदर्भ सारथि निकट नल बैठे सिरनाय ॥ २२ ॥

चौपाई ।

सुनि आगमन अवध पुरराई ।
दमयन्ती हिय महं अकुलाई ॥
अस निज मनहिं कीन्ह अनुमाना ।
बिनु पति मिले तजब मैं प्राना ॥
सखि केशिनि को तुरत बुलाई ।
भेद लेन हित तहां पठाई ॥
नल प्रति सो बोली कर जोरी ।

सुनिये कछु सब बिनती मोरी ॥
दमयन्ती तब पता मंगावा।
सो मोसुन कहिये सतभावा ॥
मैं सारथी अवध नृप केरा।
बाहुक नाम मोर सब टेरा ॥
सुने आजु तव सखि कर ब्याहू।
लायउं हय जिमि पवन प्रवाहू ॥
अति अचरज यह है मन मोरे।
नारि चरित जग लखि सकु कोरे ॥

दोहा।

नल रानी पतिव्रत रही निमिखि न त्यागी संग।
अल्प दिवस के बिपति में कीन्ह सत्यता भंग ॥ २३ ॥

चौपाई।

पर पति कर इच्छा सो कीन्हा।
त्रिया सुभाव परै नहिं चीन्हा ॥
सुत बिन प्रिय जो कछु जग माहीं।
बिपति काल अनहित है जाहीं ॥
तब प्रत्युत्तर केशिनि दीन्हा।
जानतु हो कछु नल जो कीन्हा ॥
अबलहिं कानन मह सो त्यागे।
अति कठोर उर दया न लागे ॥

केहरि करि बृहु आमिष भोगी ।
डरत ताहि प्रति बिरह बियोगी ॥
नींद असन भूषन तजि सोई ।
पिय पिय रटि निसवासर गोई ॥
सुनि दुख नल उर रहे न धीरा ।
सोचु बिकल बहं नैन सु नीरा ॥
यद्यपि नल अति अनुचित कीन्हा ।
रानी ब्रथा अजस तिहिं दीन्हा ॥

दोहा ।

निज पति कर निन्दा किये तिय कर धर्म्म नसाय ।
रानी उचित न कीन्ह यह कहे पिता गृह आय ॥२४॥

चौपाई ।

जो न होत नल त्यागे ताहीं ।
बचत न प्राण नृपति संग माहीं ॥
अल्प चूक पर अतिशय क्रोधा ।
यह न उचित तिय धर्म्म विरोधा ॥
रह जो धरनि धाम अधिकारी ।
भयो आजु बिनु आन दुखारी ॥
अचरज कौन गेह धन रीते ।
जो ताकी मति भै बिपरीते ॥

अस कहि नृप पुनि २ बिलखाई ।
निज गति देखि रहे चुप लाई ॥
तब केशिनी गई रनवासे ।
दमयन्तिहिं सब हाल प्रकासे ॥
समाचार सुनि निज पति जानी ।
मिलन आस करि हिय अकुलानी ॥
केशिनि कहं पुनि तहां पठावा ।
सुत तनया तिहि संग लगावा ॥

दोहा ।

नल देखे निज संत तिन धरि न सकै उर धीर ।
धाइ लाइ उर लीन्ह तिहि लै उसास गंभीर ॥ २५ ॥

चौपाई ।

तब नल पुनि बोले अकुलाई ।
हैं ये युग मम शिशु की नाईं ॥
बिनु देखे बीती बहु बारा ।
तिहि ते उर महं शोक अपारा ॥
बोले सो अति होइ उदासा ।
अब तो इनहिं और की आसा ॥
अब लों रह नल नृप कहु नामा ।
प्रात गमन करि हैं परधामा ॥
धन्य सुभाव [illegible] गाई ।

त्रिज पति तजि पर पति मन लाई ॥
पतिव्रत दमयन्ती कहवाई ।
सो प्रातहि निज धर्म्म गवाई ॥
सुनि केशिनी तासु की बाता ।
दमयन्ती सन किय विख्याता ॥
पुनि बोली केशिनि सुनु रानी ।
है यह महापुरुष मैं जानी ॥

दोहा ।

धान्य गयी ऋतुपर्ण हित चणहिं कीन्ह जिवनार ।
सुनि दमयन्ती कहे तव स्रवत नैन जल धार ॥ २६ ॥

चौपाई ।

सखि कछु मांगि लाउ तैं जाई ।
सुनि केशिनी तुरत लै आई ॥
चखत स्वाद दमयन्तीहिं भावा ।
पति इव समुझि अमित सुख पावा ॥
निज जननिहिं तब हाल जनाई ।
आयसु देहु जाउं तहं धाई ॥
समाचार सुनतहिं हरषाई ।
जान कहि तिहिं अति सुख पाई ॥
निज सुत सुता संग लै लीन्ही ।
नल पहं चली हर्ष चित कीन्ही ॥

सारथि वेष प्राणपति देखी।
कियो ग्लानि हिय माहिं विसेखी॥
नैन धारि चलु व्याकुल भारी।
प्रियतम चीण शरीर निहारी॥
बाली पुनि करि हृदय कठोरा,
सुनहु प्राणनायक चितचोरा॥

दोहा।

कानन तजि अकेल मुहिं कहहु कौन यह नीति।
सुनत नृपति लज्जित भयो समुझिनिजै अनरीति॥२७॥

चौपाई।

पुनि कह नृप सुनु प्रिया सयानी।
आपद करै बुद्धि कर हानी॥
जप तप धर्म्म नेम आचारा।
वृथा होत सबही व्योहारा॥
जो विधि हरि लीन्हा सुख भोगा।
सो कीन्ह्यो मम तार विओगा॥
दारुन दुसह बिरह तव प्यारी।
सहै कठिन करि उर सुकुमारी॥
यद्यपि मैं अति कीन्ह अनीती।
तदपि न तोहिं उचित अस नीती॥

जो पति कर निन्दा तिय करई ।
रौरव नर्क कल्प-सत परई ॥
इन बातन सों मोहि न कामा ।
ह्वैहौ प्रात अपर की बामा ॥
दमयन्ती बोली कर जोरी ।
प्राणनाथ सुनु बिनती मोरी ॥

दोहा ।

तोहि बुलावन हेतु प्रभु मैं यह कीन्ह उपाय ।
तजि ऋतुपर्ण नरेस कौ देखहु अपर न राय ॥ २८ ॥

चौपाई ।

मैं निज चित्त कीन्ह प्रन येहा ।
प्रभु बिनु आजु तजब निज देहा ॥
करिहौं अग्निदाह तन केरा ।
पिय बिरहागि न सहब घनेरा ॥
भीमसेन नृप अरु अवधेसा ।
समाचार सुनि युगल नरेसा ॥
परमानन्द मगन मन भयऊ ।
युग नरेस पुनि नल पहं गयऊ ॥
तब ऋतुपर्ण कहे कर जोरी ।
भै अनीति अनजानत मोरी ॥
छमब सकल अब चूक हमारी ।

बारंबार बिनय अनुसरी ॥
अस कहि नृप निज सुर पगुधारा ।
बोल्यो तबहिं बिदर्भ भुवारा ॥
उचित न जाब निषद पुर केरा ।
लेहु सकल मम राज घनेरा ॥

दोहा ।

नल श्वसुरालय में रहब समुझि न नीक बिचार ।
कीन्ह्यो हठ गृह जान हित नृप सन बारहिं बार ॥२९॥

चौपाई छन्द गोया ।

सुनि भीमसेन नरेश रथ इक दीन्ह सुन्दर आनिकै ।
षोड्श सुभग गज पंचशत दिय अश्व अतिगुण जानिकै ॥
पदचर सुभग रस शत दिये नृप डरत जो नहिं काल को
कीन्हे बिदा सन्मान करि बहु तबहि निषद भुवाल को ॥
नल जाइ पुर निज अनुज सों पुनि कहे पासा खेलिहौं ।
जिति हौ हमहिं ह्वै दास तबमैं तोहि नित सिर मेलिहौं
बिधि बस पराजय होइ हौ तुम राज मैं निज लेइहौं ।
शिव की कृपा जो होइ मो पर बिपति सब तजि देइहौं

दोहा ।

सब दिन बिपति नहीं रहै सुनो सबै चित देय ।
जीत्यो नल नृप बार तिहि पासा निज कर लेय ॥३०॥

सोरठा ।

तासु अनुज निज चूक, समुझि बेंत इव कांपिउ ।
होइ गयो सो मूक, कछु नहिं आवै बचन कहि ॥ १ ॥
बोले निषद नरेस, जनि पुष्कर डर मानहू ।
करहु सदा सुख बेस, यथा प्रथम तव कार्य रहु ॥ २ ॥
यह मैम दिनों कर फेर, तात नहीं कछु चूक तव ।
तब लगि बिपति घनेर, रहत जासु सिर लिखे बिधि॥३॥
लीन्ह्यो नृपति मंगाय, पुनि निज दारा सुत सुता ।
आपद सकल नसाय, प्रभु अनुग्रह लह्यो सुख ॥ ४ ॥
यह दम्पति सुभ हाल, सुनहिं जो नर अरु गावहीं ।
ता पर सदा सु काल, रहै सुखद शंकर दया ॥ ५ ॥

अहिल्याबाई ।

दोहा ।

अपर हाल सुनिये सबै नाम अहिल्या नारि ।
कलियुग महं जिन प्रगट किय धर्म्म कीर पद चारि ॥३१॥

चौपाई ।

है जग बिदित तासु की नामा ।
हिमगिरि ते रामेश्वर धामा ॥
पुष्कर सेतु कूप सोपाना ।
धर्म्मालय सुभ कीरति नाना ॥

जिन जग महं निज चिन्ह बनाई ।
नाम राखि हरिधाम सिधाई ॥
तासु कीर्ति देखत सब लोगा ।
जानत नहिं तिहिं जीवन भोगा ॥
ताते कहौं कछुक मैं भाषी ।
सुनहु सकल चित दै अभिलाषी ॥
नृप मल्हारराव इक जासू ।
जग में हुल्कार नाम प्रकासू ॥
पुर होहन नीरा सरि तीरा ।
शूद्र बंश प्रगटे सो बीरा ॥
कह को तासु भाग्य कर लेखा ।
भयो नाम जग प्रगट विसेखा ॥

दोहा ।

कटक पेशवा के भयो सेनापति सो जाय ।
प्रगट कियो जग नाम बहु सुयस रहे जग छाय ॥३२॥

चौपाई ।

लुटेहु भासकर जब बंगाला ।
यह गुजरातहिं कियो बिहाला ॥
दिल्लीपति अहमद सुलताना ।
ता कर राज छीन बलवाना ॥

दूजे आलमगीरहिं दीन्हा।
पुनि लाहौर गमन सो कीन्हा॥
करि अधिकार मरहठन केरा।
बढ़यो जग महं नाम घनेरा॥
दुर्रानी अहमद सुलताना।
पानीपत महं जो मैदाना॥
भयो ताहि जानत सब कोऊ।
भाऊ संग रहे तहं सोऊ॥
भई तहां बहु भांति लड़ाई।
भागे सो रण पीठ दिखाई॥
निज प्रभु कर सों प्राण अधारा।
किये अमित देसन अधिकारा॥

दोहा।

पायो मालव देस सो सेवकाई के हेत।
करत राज तहं नीति युत करि निज मतिहिं सचेत॥३२

चौपाई।

खण्डेराव नाम सुत तासू।
पतिब्रत नारि अहिल्या जासू॥
ग्राम कुम्भेर भरतपुर पाहीं।
जाटन तिन्हिं मार्‍यो रन माहीं॥

ऋषि रस स्वर्ग इन्दु सन बीती ।
भै मल्हार तव बिपरीती ॥
रहे एक तिहि तिय कर जाता ।
मालीराव नाम विख्याता ॥
खण्ड मास करि राज बिलासा ।
सुर पुर गयो भयो कुल नासा ॥
निस्संतान कुलहिं जब देखा ।
सिर पर लिय सो राज बिसेखा ॥
उपरोहित गङ्गाधर तासू ।
अपर नाम यसवन्त प्रकासू ॥
निज मन महँ सो कीन्ह बिचारा ।
तिय सन होहि कि राज्य सँभारा ॥

दोहा ।

बालक लेवैं गोद इक अस मन कीन्ह बिचार ।
जो मानै तिय कहा मम बढ़ै अमित अधिकार ॥२४॥

चौपाई ।

तो पुनि जाइ कहे तिय पाहा ।
बिनु इक तनय न तोर निबाहा ॥
जो आपन चाहो कल्याना ।
धर्म पुत्र इक लीहु सुजाना ॥

पर अधिकार न तौ यह राजू ।
होइहिं तव सब व्यर्थ समाजू ॥
अस कहि पुनि जो नृपति समीपा ।
तिनहिं बुलायो द्विज कुल दीपा ॥
तब रानी गङ्गाधर पाहीं ।
पठयी पत्र लिखित तिहि माहीं ॥
सुनहु पुरोहित यह मम बाता ।
पति मम जम्बु द्वीप विख्याता ॥
अरु सुत मालीराव सुजाना ।
जो हरि लीन्ह तिनहिं भगवाना ॥
आर्य्य बंश जौ नासे नाथा ।
पर सुत गोद लिये का हाथा ॥

दोहा ।

पुनि सो निज सेना रची करन हेतु संग्राम ।
करिहौं रण यह सोचि मन हृदय सुमिरि हरिनाम ॥२५॥

चौपाई ।

साहस देखि तासु सब राजा ।
भे अधीर निज सहित समाजा ॥
जब रण तें नृप गये सकाई ।
रानी गुरु कहं बोलि पठाई ॥

मंत्री पद दीन्हा तिहिं रानी ।
सेनापति तुक्का कहं मानी ॥
तासु कार्य्य विभाग करि दीन्हा ।
जिहिं न होइ रिपुता अस कीन्हा ॥
सम्बत् रस शर गुण करि राजू ।
अति निर्द्वंद्व न भयो अकाजू ॥
जब सों लीन्ह राज्य अधिकारा ।
रहु युग कोटि द्रव्य भण्डारा ॥
वेद लक्ष अथवा हर सीसा ।
दीन्ह समर्पि हेतु जगदीसा ॥
कर आवत प्रति सम्बत् येहा ।
पुन्य करत हरि चरन सनेहा ॥

दोहा ।

धर्म्मशास्त्र के नीति युत करत सभा नित सोय ।
हंस रूप ह्वै देत करि क्षीर नीर को दोय ॥ ३६ ॥

चौपाई ।

करत न्याय अल्पहु चित लाई ।
पक्ष रहित अति सूक्ष्म सुहाई ॥
नित नूतन अति प्रजा सुखारी ।
सब गुणज्ञ सुकर्म्म अधिकारी ॥

जो अधिकार जाहि तिन दीन्हा ।
ता कहं तिहि ते बिलग न कीन्हा ॥
निज मन महं सो कीन्ह बिचारा ।
जो अपरहिं देहों अधिकारा ॥
तिन सों होइहिं अवसि लड़ाई ।
चहहिं एक पद अपर नसाई ॥
हरि भय युत करति सब कामा ।
प्रति दिन जपति रहति हरि नामा ॥
कहति सभासद सन नित सोई ।
छल तजि करहु कार्य्य सब कोई ॥
हम सब सों हरि लेहैं लेखा ।
जो कछु करिहो कार्य्य बिसेखा ॥

दोहा ।

उठति सदा सो प्रातही रहे अर्द्ध निसि जाम ।
करि पूजा प्रभु बिबिध बिध जपति ध्यान धरि नाम ॥३७॥

चौपाई ।

करि कछु पाठ धर्म्म युत सोई ।
दान देत तिहिं याचत जोई ॥
पुनि बिप्रन बहु भांति जिंवाई ।
पावत सो प्रसाद पुनि जाई ॥

करि कछु काल सयन सों बाला ।
पुनि करि सो शुभबेष नृपाला ॥
बैठत सभा मांह नित जाई ।
बूझत धर्म्म न्याय चित लाई ॥
समय अगस्ति अस्त कर जानी ।
संध्या करन जात तब रानी ॥
करि संध्या बंदन हरि पूजा ।
प्रभु पद रति नित कार्य्य न दूजा ॥
निसा समय करि कछुक अहारा ।
बूझति राज कार्य्य ब्यौहारा ॥
पुनि बहु भांति हरिहि सिर नाई ।
करु सो सयन सेजगृह जाई ॥

दोहा ।

पुर इन्दौर प्रथम रह्यो अतिहि अल्प इक ग्राम ।
तासु राज्य महं नगर ह्वै भयो जगत सरनाम ॥ ३८ ॥

चौपाई ।

करति न लोभ प्रजा धन केरा ।
देखि बृद्धि करु हर्ष घनेरा ॥
तासु राज्य महं कर इक ग्रामा ।
तहां बसत युग बंधु सुनामा ॥

तद्पि अपर बनारस दासा ।
भयो काल बस सो अन्यासा ॥
बिनु सन्तान तासु की दारा ।
निज मन लिन करि यह सुबिचारा ॥
जाइ मइसुर नृप रजधानी ।
देहुं द्रव्य सब अस उर आनी ॥
पीछहिं आईं अहल्या मासा ।
तिन निज कहे सकल इतिहासा ॥
सुनि रानी बोली करि सोचा ।
परमञ्ज सेव कर्म प्रति पोचा ॥
निज पति नाम हेतु तुम दोऊ ।
रचवावहु सुभ कीरति कोऊ ॥

दोहा ।

तासु बचन सुनि युगल तिय आईं निजपुर सोइ ।
रचु सरिता महं घाट इक अति दृढ़ अबलों जोइ ॥२८॥

चौपाई ।

ग्रीषम काल आगमन जानी ।
निर्जल ठौर जातु जब रानी ॥
तहं तहं अनुचर तुरत पठावत ।
यात्री जन जिहिं ते सुख पावत ॥

शीत काल को जानि चढ़ाई ।
बहु कम्बल पट लेत मंगाई ॥
प्रति सम्बत दीनन यहि भांती ।
देति महा करुणा की कांती ॥
तासु शील अरु दान कहानी ।
किहिं विधि नर बरनै इक बानी ॥
बहु सर सरित मीन जिहिं माहीं ।
भच्छ सदा अनुचर लै जाहीं ॥
क्षेत्र मोल लै फल युत जोई ।
त्यागि देत प्रच्छिन हित सोई ॥
तासु शील गुण धर्म्म बड़ाई ।
अति अपार नहिं बरनि सिराई ॥

दोहा ।

को अस जम्बू द्वीप महं जो तिहिं जानत नाहिं ।
कौन तीर्थ यहि देस में नहीं कीर्ति जिहिं माहिं ॥४॥

चौपाई ।

जाति भील इक अधम लुटेरे ।
जो लूटहिं नित बनिक घनेरे ॥
यही काम तिन कर जिय जानी ।
सुगम उपाय कीन्ह यह रानी ॥

पैसा अर्द्ध वृषभ प्रति लेहू ।
बनिकन कुपथ पार करि देहू ॥
होइहिं जो कछु ता कर हानी ।
देन पड़े तुम कहं अस जानी ॥
करहु सदा तिन की रखवारी ।
पैहो उचित दण्ड नतु भारी ॥
देखि तासु अति प्रबल प्रतापा ।
भयो अल्प अति तस्कर दापा ॥
रूपवती अति सो तिय नाहीं ।
गौर बरन प्रकाश मुख माहीं ॥
ससि मण्डल मुख धर्म्म प्रभावा ।
अति सुसील चित शान्तसुभावा ॥

दोहा ।

नाम अनन्ता नारि इक मातु सेंधिया वीर ।
रति निन्दक सो सुन्दरी यामें कछुक न फेर ॥ ४१ ॥

चौपाई ।

सुनि सो तासु प्रसंसा भारी ।
यश गुण शील नीति व्रत धारी ॥
करि निज सुन्दरता अभिमाना ।
पठयो इक अनुचरी सुजाना ॥

ताहिं देखि चेरी जब आई ।
पूंछि तबहि अनन्ता बाई ॥
तब चेरी कह सुनिये रानी ।
नहिं सो बहु शोभा कर खानी ॥
तासु धर्म्म तप पुण्य प्रभावा ।
बदन प्रकाश ज्योति दरसावा ॥
सदा प्रफुल्लित मन सो रहई ।
कबहुं न चित्त ग्लानि कछु लहई ॥
पंच तत्व सों भइ जब न्यारे ।
रहे बदन जनु ससि उजियारे ॥
जब ते बिधवापन तिन पावा ।
श्वेत बस्त्र तजि आन न भावा ॥

दोहा ।

यद्यपि महरानी रही अति पुनीत सुकुमारि ।
धर्म्म जानि भूषन बसन त्यागि दियो सो नारि ॥ ४२ ॥

चौपाई ।

जो बिधवा तिय बसन सुरंगा ।
अरु बहु भूषन साजै अंगा ॥
अंजन चक्षु पान मुख खावै ।
पगन महावर रंग लगावै ॥

भोजन नित सुपाक को करई ।
पर पति इच्छा सो चित धरई ॥
अवसि नर्क महँ सो तिय जाई ।
पुनि विधवा ह्वै निज तरुनाई ॥
निज पति संग उचित तनु त्यागा ।
तिहिं बिनु करतश्रृङ्गार सुहागा ॥
कबहुं न होइ तासु उधारा ।
सुनहु तिया कर मनहिं बिचारा ॥
पति सुख देन हेतु सब भूषन ।
तिहिं बिनु धारन ते अति दूषन ॥
अब बहु नारि जगत महँ भाई ।
निज पति देखत जूड़ी आई ॥

दोहा ।

पति देहान्त भयो जबहिं करि श्रृङ्गार नवीन ।
घूमत गज इव मदगलित कछुआ न चित्त मलीन ॥ ४२ ॥

चौपाई ।

जहाँ पतिव्रत धनि सो ग्रामा ।
धनि सो कुल अरु धन्य सुधामा ॥
धनि सो ब्रर जु पाउ अस नारी ।
श्वसुर पिता दो कुल उजियारी ॥
धनि मल्हारराव कुल भाई ।

धर्म्मकेतु जहं नारि सुहाई॥
नारि अहिल्या भाग्य बड़ाई।
सकहिं न शेष सारदा गाई॥
तजि सब भूषण बसन सुरंगा।
माला एक सुशोभित अंगा॥
तासु नेम व्रत धर्म्म बड़ाई।
कोउ कवि रचि पद्य बनाई॥
पुनि तिन ताहि दिखावा सोई।
देखि कहे यह उचित न होई॥
शीघ्र ताहि नर्मदा सुनीरा।
डुबवायो सो तिया गँभीरा॥

दोहा।

सो न करति निज कीर्ति पर अहमिति कवनिहुं काल।
नेम धर्म्म आचार युत जदपि रहै सो बाल ॥ ४४ ॥

छन्द गीया।

किय गमन पुर बैकुण्ठ तिय शर खण्ड ऋषि शशि जानिये। सन ईसवी यह खिष्टियन लखि सुजन निज चित आनिये॥ १ ॥ बहु एक छत्र समुकुट मौण भै नृपति यहि जग में सही। सोउ न पायो सुयश जस यह तिय अहिल्या ने लही॥ २ ॥ जबलौं दिनेश सुरेश इन्दु प्रताप यहि जग में रहै। याको सुयश अति सकल जग महँ

छाइ है सब ही कहै ॥ ३ ॥ किहिं भांति तिय कर भाख्य
नर कहि पांर कोज पावही । कछु अल्पही अवलोकि
पुस्तक दास देवी गावही ॥ ४ ॥

सोरठा ।

बिधवा तिय यहि भांति, रहै नेम दृढ़ हृदय धरि ।
होइ सुयश की कांति, पति युत पुर बैकुण्ठ लहु ॥ ५ ॥
लेइ जाय सुरधाम, निज पति नर्कहु पतित को ।
यहि बधि बिधवा बाम, जो न डिगै निज धर्म्म ते ॥ ६ ॥

रानीभवानी ।

दोहा ।

तीजी तिय जो पतिब्रता तासु भवानी नाम ।
आत्मराम की सुता सो छातिन जा को ग्राम ॥ ४५ ॥
नगर राजशाही सुभग देश बङ्ग मधिकार ।
पुर जन को सो चौधरी गुणनिधि शीलअगार ॥ ४६ ।

राय रामजीवन नर नाहा ।
राजधानि नाटौर सराहा ॥
रामकान्त सुत गुणनिधि तासू ।
दारा सती भवानी जासू ॥
अति सुन्दरि लक्षण युत सोई ।
पर हित सदा जासु मन होई ॥

रामकान्त पितु सेवक एकू ।
दयाराम नागर सु बिबेकू ॥
देखि ताहि निज राज अचीता ।
लागु सिखावन नीति पुनीता ॥
रामकान्त करि क्रोध अपारा ।
लीन्ह छुड़ाइ तासु अधिकारा ॥
दयाराम अति चतुर सुजाना ।
शीघ्र मनहिं उपाइ अनुमाना ॥
सूबेदार बंग पहं जाई ।
करन लागु सो अति सिवकाई ॥

दोहा ।

खां अलिवर्दी जासु को है नवाब उपनाम ।
एक दिवस तासों कियो बिनती दायाराम ॥ ४७ ॥

चौपाई ।

सुनिये बंग देश अधिराजा ।
रामकान्त नाटौर क राजा ॥
लच्छ लोक युत निखत कहावा ।
बीजक निज गृह मांह धरावा ॥
लिय सपीच एक बहु दामा ।
लच्छ नैत कर परम ललामा ॥

तव बार्षिक कर बातन माहीं ।
शिष देन चाहत चित नाहीं ॥
तिहिं सन सों नवाब अस भाखा ।
देहो पता जहां तिन राखा ॥
पुनि कह कोऊ तिहिं कुल माहीं ।
लायक राज अहै या नाहीं ॥
दयाराम कह सुनिये नाथा ।
जीवन अनुज पुत्र गुन गाथा ॥
देवि प्रसाद नाम सब भांती ।
सत्य सिंधु गुणशील सुकांती

दोहा ।

निज सेना सों कहे तिन रामकान्त गृह जाय ।
छीनि सबै धन तासु को बाहर ताहि कराय ॥ ४८ ॥

चौपाई ।

ताको सब धन राज सु हाई ।
देविप्रसादहिं सकल दिवाई ॥
यमन राज अनीति बहु भाई ।
कहँ लगि कहौं न जाइ गनाई ॥
करु सो जाको जो मन भावा ।
प्रकट प्रथम इतिहास जनावा ॥

धनि धनि भाग्य सबन हम केरा ।
पावत सुख यहिं राज घनेरा ॥
रामकान्त सुनि सैना आई ।
राह पनारे गयो पराई ॥
तजि धन धाम संग लै दारा ।
जात चले पथ सोच अपारा ॥
गर्भवती रानी सुकुमारी ।
चलि न सकै तिहिं दुख अति भारी ॥
परत उठत बैठत पति संगा ।
चली जात प्रिय प्रेम अभंगा ॥

दोहा ।

सुरसरि तट यहि भांति ह्वै गये पयादहिं पाय ।
तहँ लघु तरणी पर चढ़े चित अति खेद बढ़ाय ॥ ४९ ॥

चौपाई ।

तासु अधार मुर्शिदाबादा ।
गे दम्पति अति करत बिषादा ॥
गे सो जगत सेठ की शरणा ।
कुसमै जानि भजे हरि चरणा ॥
लघु मन्दिर महं बिपति गवावत ।
नित दुख सहत चैन नहिं पावत ॥
एक दिवस खिड़की तें राजा ।

देखा दयाराम कर साजा ॥
सुख आसीन पालकी सोई ।
बोले नृपति दुखित अति होई ॥
दया भाय सुन बिनती मोरी ।
छमहु कृपा करि मम कृत खोरी ॥
बिपत्ति सिंधु मैं व्याकुल भारी ॥
ह्वै जहाज मुहिं लेहु उबारी ॥
कहै नृपति जब अति बिलखाई ।
दयाराम उर करुना आई ॥

दोहा ।

निज प्रभु की दुर्दशा अस देखत भयो अधीर ।
कहै नृपति सों जाय पुनि स्रवत नयन युग नीर ॥ ५० ॥

चौपाई ।

दयाराम कह सुनहु नृपाला ।
छूटै या बिधि बिपति कराला ॥
जो लचाई द्रव्य तुम देहु ।
बीतै त्रिदिन राज निज लेहु ॥
तब नृप कह सुनु दाया भाई ।
मम धन तो तुम लीन्ह छिनाई ॥
धन अब मोहि हीन यहि कालू ।

कहं पैहौं यह द्रव्य बिशाला ॥
तब रानी कह सुनहु नृपाला ।
होहु न कछु निज चित्त बिहाला ॥
अस कहि निज भूषण तिन दीन्हा ।
दयाराम तिहिं तुरतहि लीन्हा ॥
करि बिक्रय तब कीन्ह उपाई ।
जिहिं बिध नृप कर बिपति नसाई ॥
पुर जन बनिक आदि सब काहू ।
दियो द्रव्य निवसहिं जो राहू ॥

दोहा ॥

मन्दिर देविप्रसाद ते लगि नवाब के द्वार ।
यथा योग्य धन दै सबै कहे जो बहु सरदार ॥ ५१ ॥

चौपाई ।

पांच द्रव्य ते शत परिमाना ।
देइ सबहिं पुनि कहे सुजाना ॥
मो पर करिय कृपा सब काहू ।
देहु मोहि यह अति बड़ लाहू ॥
जब यहि मारग देविप्रसादा ।
जान लगे तब करहु बिबादा ॥
तिहि लखाय पुनि कहि अस बाता ।

अति हत भाग्य अधम यह जाता ।
सकल नगर महँ यह मत भावा ।
देबिप्रसाद सुनत दुख पावा ॥
जाइ कहे नवाब सन लाला ।
ह्वै अतिशय उदास महिपाला ॥
पुनि नबाब अस बचन उचारा ।
जो अस कहत सकल संसारा ॥
हो अवश्य तुम परम अभागा ।
मैं नहिं चाहत अस हत भागा ॥

दोहा ।

दयाराम सन पूछेउ तब नवाब यह बैन ।
राय राम जीवन कुलहिं है दूजो गुणऐन ॥ ५२ ॥

चौपाई ।

दयाराम भल अवसर जानी ।
बिनय युक्त बोले मृदु बानी ॥
नाथ तासु सुत परम सुजाना ।
रामकान्त गुन नीति निधाना ॥
सुमतहिं राजतिलक तिन देऊ ।
रामकान्त दुर्दिन सब गेऊ ॥
देबिप्रसाद सु राज छिनाई ।

निज समाज ते दीन्ह दुराई ॥
जब ते नृपति राज निज पावा ।
दयाराम सन प्रीति बढ़ावा ॥
राज कीन्ह सम्बत शृङ्गारा ।
पुनि नृप पुर बैकुण्ठ सिधारा ॥
निस्सन्तान बिधी पन पाई ।
रानी हृदय सोच अधिकाई ॥
दुइ सुत रहे भवानी केरे ।
बाल पनहिं भै काल अहेरे ॥

दोहा ।

सकल काज निज सिर लियो रानी बिन सन्तान ।
निन्दति बहु महराज कहँ निज गुण नीति सु दान ॥५३॥

चौपाई ।

इन्दु लक्ष बसु गुण सहस्र दस ।
नियत बर्ष प्रति द्रब्य दान अस ॥
पावत कोबिद साधु समूहा ।
कहं लगि कहौं तासु यश जूहा ॥
कृष्णार्पण बीघा प्रर लक्षा ।
सदा सो कर गो द्विज की रक्षा ॥
बहु सर कूप घाट सोपाना ।
मन्दिर रचवायो तिन नाना ॥

पुनि शत लोक धर्म्म गृह कीन्हा ।
काशी महँ प्रकटित सो चीन्हा ॥
यात्री जन जहँ करत निवासा ।
आव करन जो शिव पुर बासा ॥
बहु स्वदेश जन जो तहँ आवैं ।
भोजन बसन सबै सो पावैं ॥
पंचक्रोश सबै मग माहीं ।
रचवायो बहु कूप सु ताहीं ॥

दोहा ।

अल्पान्तर बहु वृच्छ अरु धर्म्म ठौह तिहिं पास ।
यात्री जन सुख हेतु यह प्रतिकूपन सुखबास ॥ ५४ ॥

चौपाई ।

अरु बहु धर्म्मालय बनवाई ।
तहँ सब सुभग दीन्ह रचवाई ॥
नित मन अष्ट चना भिगवाई ।
तन्दुल पंचबिंश मन लाई ॥
शिवपुर महँ याचक जो आवहिं ।
सदाबर्त नित सो सब पावहिं ॥
शशि शत अरु बसु नर नारी जन ।
भोजन करहिं सदा अपने मन ॥

जबहिं भवानी शिवपुर आई ।
द्विज श्रुत ऋषि शत तरणीं लाई ॥
सुरसरि तीर बड़ नगर ग्रामा ।
बसति बहुत तहं तिय अभिरामा ॥
करि निज मन रानी अनुमाना ।
याचक हित यहि महँ जिय जाना ॥
जो नहिं आइ सकैं मम पासा ।
फिरै न पावहिं होइ निरासा ॥

दोहा ।

जो किसान भण्डारपति लेखक अरु दीवान ।
शुचि घर द्विज शत द्रव्य सों क्रम ते देहिं सुजान ॥५५॥

चौपाई ।

जो विशेष पुनि याचै कोई ।
ता महँ मोरि रजायसु होई ॥
जहँ लौं द्विज तनया तिहि राजा ।
रानी देइ ब्याह कर साजा ॥
प्रति सम्वत नवरात्र जु होई ।
विधवा तिय अरु कन्यहिं सोई ॥
युग सहस्र सारी मंगवाई ।
देति हर्ष युत तिहिं पहिनाई ॥

इक इक नथ प्रतिसारिन संगा ।
दान देति ब्रत नेम अभंगा ॥
द्रव्य सहस दिक गुण हरसीसा ।
पावहिं बुध जन देहिं असीसा ॥
तिन वसु वैद्यहिं आयसु दैऊ ।
प्रजा निरोग्य रहैं चित ठैऊ ॥
औषिध लै घूमहिं प्रतिग्रामा ।
रोगिहिं कुशल करैं बिनु दामा ॥

दोहा ।

सेवक रोगी टहल हित रहहिं ताहि के संग ।
कहहिं प्रजा सब हर्ष युत बाढ़ै सुयश अभंग ॥ ५६ ॥

चौपाई ।

तासु धर्म्म ब्रत नेम कहानी ।
बिनु देखे किमि जाइ बखानी ॥
बामा मन रंजन महँ जोई ।
कहहुं सुनो चित दै सब कोई ॥
एक समय अस अचरज भैऊ ।
कोऊ प्रजा नहिं कर तिहिं दैऊ ॥
करि बिक्रय सब अन्न भवानी ।
तीनि लच्छ धन पायो रानी ॥

दियो दान जा कहँ जो भाषा ।
भयो न पूर्ण दीन अभिलाषा ॥
भूषन विक्रय करि ततकाला ।
देइ याचकन कियो निहाला ॥
बचन तासु प्रखान कर चीन्हा ।
तजै न सो जो कछु कहि दीन्हा ॥
दानि शिरोमणि तिय जग माहीं ।
कलि महँ तिहिं सम दूसरि नाहीं ॥

छन्द तोमर ।

कवि कोउ नहिं जग माहिं । कहि सुयश पारहिं जाहिं ॥
नित उठत निसि लखि याम । जप ध्यान करति सुबाम ॥
शुभ शौच करि पुनि प्रात । पूजै सदा जग त्रात ॥
श्रुति सुनै चित्त लगाय । दुइ प्रहर जब ह्वै जाय ॥
उठि करति कछु जल पान । पुनि समय निज अनुमान ॥
करि पाक निज कर सोय । नित दस द्विजैं जो होय ॥
तिहि ते प्रथमहिं जिंवाय । पुनि सो प्रसादहिं पाय ॥
मन्दिर दिवानहिं पैठि । कुश साथरी पर बैठि ॥
ताम्बूल मुख शुचि जानि । आयसु लिखावति रानि ॥
जो करत जोजो काम । तिहिं सौंपि सो सो बाम ॥
दिन कर रहे भरि याम । हरि चरित सुनति ललाम ॥

पुनि युग घड़ी दिन रहत । करि जाहि जो कछु कहत ॥
आवहिं करावन शुद्ध । पुनि याचि चित दै बुद्ध ॥
संध्या समय मन धारि । तब उठति सो बर नारि ॥
बसु दण्ड करि सो जाप । भोजन समय जिय थाप ।
पुनि अल्प ही कछु पाय । करै कार्य्य चित्त लगाय ॥
दस घड़ी बूझी जाय । तब सैनगृह चित लाय ॥
है नींदबस गुण ऐन । यह कार्य्य ते दिन रैन ॥
सुनि तासु यश सम्बाद । जिहिं बढ़ै नहिं अह्लाद ॥
सो नारि यमपुर जाहिं । यामें कछू शक नाहिं ॥

सोरठा ।

षोड़श दून प्रमान, बय बीते बिधवा भई ।
भजति सदा भगवान, जानि अभागिनि आपु कहँ ॥
पूर्ब्ब जन्म के पाप, पति तिय ते प्रथमहिं मरै ।
उर अति करति बिलाप, सुनि अस धर्म्म पुरान ते ॥
हर युत रावण शीश, योग ताहि शर गुण करहु ।
पंच मास जो बीस, होइ ताहि तिहिं युक्त करि ॥
सम्बत बय सम माहिं, धर्म्मध्वज तिय तत्व तजि ।
जहँ मुनि जन सब जाहिं, गई भवानी मुदित मन ॥
पतिब्रत तिय सम्बाद, जिहिं सुनि तिय पतिब्रत चहै ।
ब्राह्मण देविप्रसाद, रचे हृदय अनुमानि अस ॥

धर्माधर्म्म ।

अब नारिन को कर्म, कहौं लिखित जो शास्त्र महँ ।
परम कुशल मय धर्म, जन्म काल ते मरन लगि ॥
बालापन सखि संग, क्रीड़ा करै अनेक बिधि ।
रहै सदा तिहि ढंग, मात पिता जिहि सुख लहै ॥
राखै सब सों प्रीति, दुष्ट नारि को संग तजि ।
श्रेष्ठ तियन की नीति, देखि चलै तिहिं चाल पर ॥
बंधु नारि सों नेह, करि सीखै गृह काज सब ।
जानि निजै सम देह, राखै प्रीति पुनीत अति ॥
करै पिता जब व्याह, जाय श्वसुरपुर में बसै ।
मन करि परम उछाह, सेवै पति पितु मातु कहँ ॥
राखै उर अति लाज, श्वसुर तुल्य निज भसुर कर ।
करै सकल गृहकाज, जानि जिठानिहिं सासु सम ॥
निशा बिगत लखि प्रात, जागै सब ते प्रथम सो ।
भूषित ह्वै निज गात, करै सकल गृह काज नित ॥
सुत सुत बंधु समान, देवर दिवरानी लखै ।
करि आदर सन्मान, सती धर्म चर्चा करै ॥
सकल देव मय जानि, पति पूजा प्रतिदिन करै ।
जानि मुक्ति की खानि, चरण शरण गहि प्रेम युत ॥
करि अनेक शृङ्गार, पति मन बस करि राखई ।
तिय ब्रत नेम अचार, एकहि पति सेवा सही ॥

त्रियहिं उचित यह नाहिं, बिनु पति आज्ञा तीर्थ कर।
आयसु तजि जो जाहिं, चहैं पुण्य पातक लहैं॥
निज पति सेवा त्यागि, बहु तिय पूजहिं देवतहिं।
प्रियहिं महा बिष माँगि, मनहुं डारि करते अमी॥
करि शृङ्गार नवीन, जांहि जहां मेला सुनहिं।
पति सेवा ते हीन, पर पति कर इच्छा करहिं॥
तिहि ते विधवा होय, सहहिं बिपति बहु जन्म भरि।
सुनहु तिया सब कोय, पति सेवा ते कुशल तव॥
अंध बधिर अति दीन, कोढ़ी कुब्जा पतिहु तजि।
जो पर पति महँ लीन, अवसि नर्क दुख पावहीं॥
अब जग महँ बहु नारि, पतिहिं कहहिं दुर्बचन बहु।
करैं बड़नि सों रारि, सासु श्वसुर मानै नहीं॥
पहुंचतही गृह माहिं, बिलग करहिं देवर भसुर।
तनिक न हृदय लजाहिं, पति सों कलह मचावहीं॥
कहँ लगि कहौं बखानि, करैं न धर्म बिचार कछु।
करहिं पाप मन मानि, भये वर्णसंकर कलिहि॥
ता को फल कलिकाल, प्रगट दिखात लखो सबै।
रॉड़ होहिं बहु बाल, चढ़त तरुनई पति मरहिं॥

शंकर छंद।

पिलकिछा ग्राम अनूप है इक गोमती सरि तीर।
जहँ बसत सकल समाज द्विजन च सुजन अति गंभीर॥

पुर जन सहित सब भट्ट अपर धनाढ्य धर्म प्रवीन ।
है खुरहन तहसील महँ च जौनपुर आधीन ॥
ता महँ बसत द्विज एक ता कर नाम सीताराम ।
सो रचे यह इतिहास उर अल्हाद करि हित बाम ॥
तिहि ग्राम महँ है पाठशाला तासु पाठक पास ।
तिहि नाम देवि प्रसाद तासों प्रथम पढ़ु ग्रंथ दास ॥

—✻✻✻—

शुद्धाशुद्धपत्र ।

पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ई० प०	८	सीतरामउपाध्या	सीतारामउपाध्याय
१	७	हरि	हर
"	१४	की	कवि
३	६	संग	अंग
४	३	नव	तब
६	१२	हरि	हर
१६	१४	क्रतुपर्ण	ऋतुपर्ण
१७	२	"	"
१८	१	सब	अब
"	१५	बिन	बित
२०	८	सुन	सुत
२३	६	क्रतुपर्ण	ऋतुपर्ण
३६	१३	मधिकार	अधिकार
४१	२	शिष	शेष
४८	२	कृषि	ऋषि
"	१८	बिधवा	सधवा
५२	१६	बन्धु	बधू
५४	२	खूरहन	खूटहन
"	"	च	जो

सी० रा० उ० ग्रं० कृ० पिलकिछा (यवनपुर)